खण्ड-369, अंक-1
शुक्रवार, 24 फाल्गुन, शक संवत् 1906
(15 मार्च, 1985 ई0)

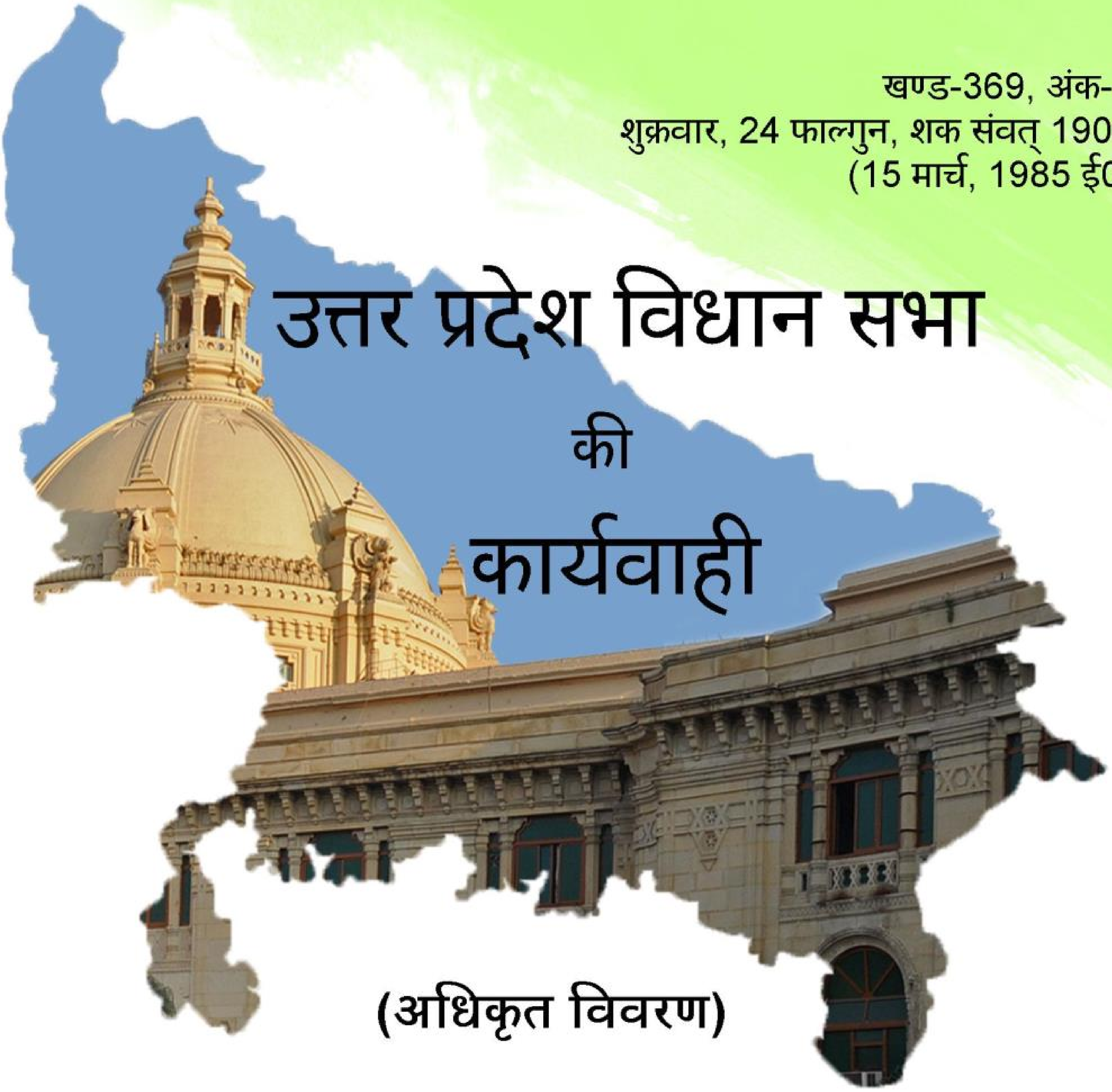

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 369 में 7 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, इलाहबाद , उत्तर प्रदेश (भारत)
1985

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उपस्थित सदस्य	1—2
शपथ ग्रहण न करने वाले सदस्यों के सम्बन्ध में निर्देश ..	3
अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिए श्री राज्यपाल द्वारा श्री जयराम वर्मा की नियुक्ति की सूचना	3
विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन	3
नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री नियाज हसन को बधाई ..	4—8

विधान सभा पुस्तकालय

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शुक्रवार, दिनांक 15 मार्च, 1985

विधान सभा की बैठक सभा मंडप, लखनऊ में 3 बजे दिन में कार्यकारी अध्यक्ष, श्री जयराम वर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे।

अकबर हुसैन बावर, श्री (फैजाबाद)
अचल सिंह, श्री (फतेहपुर)
अमिताभ अनिल दुबे, श्री (गाजीपुर)
अम्बिका सिंह, श्री (बस्ती)
अर्जुन सिंह यादव, श्री (जौनपुर)
अलमेलू अम्माल, कुमारी (बस्ती)
अवधेश प्रसाद, श्री (फैजाबाद)
अशोक सेहरा, श्री (आगरा)
अहिवरन, श्री (शाहजहांपुर)
इन्द्रजीत, श्री (फतेहपुर)
उमा त्रिपाठी, श्रीमती (हरदोई)
ओम प्रकाश रिछारिया, श्री (झांसी)
कनक सिंह, श्री (गाजियाबाद)
कमला दरियाबादी, श्रीमती (कानपुर)
कल्यान सिंह, श्री (अलीगढ़)
काजी मोहिउद्दीन, श्री (सहारनपुर)
कामेश्वर उपाध्याय, श्री (देवरिया)
किरन पाल सिंह, श्री (बुलन्दशहर)
किशन लाल, श्री (पीलीभीत)
गजराज राम, श्री (जौनपुर)
गजराज सिंह, श्री (गाजियाबाद)
गोपीनाथ दीक्षित, श्री (उन्नाव)
गौरी शंकर, श्री (इटावा)
चारू शीला, श्रीमती (मुजफ्फरनगर)
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री (गोरखपुर)
जागन सिंह, श्री (रामपुर)
ताराचन्द्र सोनकर, चौधरी, (लखनऊ)
दलजीत सिंह, श्री (रामपुर)
दीपक कमार, श्री (मुजफ्फरनगर)
नत्थू लाल विकल, श्री (बरेली)
नरेन्द्र सिंह, कुंवर (सहारनपुर)
नरेन्द्र सिंह, चौधरी (कानपुर)
पद्मा सेठ, श्रीमती (सीतापुर)
परमाई लाल, श्री (हरदोई)
परागी लाल, चौधरी (सीतापुर)
पशुपति नाथ, श्री (कानपुर)
प्रदीप माथुर, श्री (मथुरा)
प्रभु दयाल, श्री (मेरठ)
प्रमोद कुमार, श्री (प्रतापगढ़)
फजले मसूद, श्री (देवरिया)
फसीउर्रमान, श्री (गोन्डा)
(उर्फ मुन्नन खां)
बलजीत, श्री (मथुरा)
बसन्त सिंह, श्री (बिजनौर)
बालेश्वर, श्री (देवरिया)
बुनियाद हुसैन अन्सारी, श्री (सीतापुर)
भगवती प्रसाद, श्री (मिर्जापुर)
भगवती सिंह विशारद, श्री (उन्नाव)
भगवानदीन कुशवाहा, श्री (कानपुर)
भोला शंकर मौर्य, श्री (बदायूं)
भोला सिंह, श्री (इलाहाबाद)
मनोहर लाल, श्री (उन्नाव)
महेन्द्र प्रताप सिंह, श्री (इलाहाबाद)
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री (एटा)
मुहम्मद अबरार अहमद, श्री (बदायूं)
मुहम्मद आजम खां, श्री (रामपुर)
मूलचन्द, श्री (वाराणसी)
मोहम्मद असलम खां, श्री (सहारनपुर)
मोहम्मद वसीम, हाजी (रायबरेली)
मोहम्मद सफीउर्रहमान अंसारी, श्री (वाराणसी)
रजनीकान्त, श्री (वाराणसी)
रणजीत, श्री (देवरिया)
रमाकान्त मिश्र, श्री (इलाहाबाद)
रमाशंकर कौशिक, श्री (मुरादाबाद)
राकेश धर त्रिपाठी, श्री (इलाहाबाद)
राजबहादुर, श्री (जौनपुर)
राजित, श्री (वाराणसी)
राजेन्द्र शर्मा, श्री (मेरठ)
राजेश कुमार खंरा, श्री (ललितपुर)
राम आसरे, श्री (हरदोई)
राम नरेश यादव, श्री (मैनपुरी)

रामपाल, श्री (हरदोई)
राम बदन एडवोकेट, श्री (आजमगढ़)
रामराज शुक्ल, श्री (प्रतापगढ़)
राम लाल, श्री (सीतापुर)
राम सरन, श्री (सहारनपुर)
राम सागर, श्री (बाराबंकी)
राम सागर राव, श्री (बहराइच)
लक्ष्मी नरायन, श्री (जौनपुर)
विलायती राम कल्याल, श्री (कानपुर)
वीरेन्द्र प्रताप शाही, श्री (गोरखपुर)
वीरेन्द्र सिंह, श्री (एटा)
वीरेन्द्र सोन, श्री (आगरा)
शारदा प्रसाद बिन्द, श्री (वाराणसी)
शिवनाथ सिंह, श्री (बिजनौर)
शिवनाथ सिंह कुशवाहा, श्री (कानपुर)
शिव बालक, श्री (रायबरेली)
शिवानन्द नौटियाल, डा० (चमोली)
शेर बहादुर सिंह, श्री (फैजाबाद)
श्रीनाथ सिंह, श्री (वाराणसी)
श्रीप्रकाश, श्री (आजमगढ़)
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री (वाराणसी)
सतीश अजमानी, श्री (खीरी)
सत्य प्रकाश विकल, श्री (आगरा)
समरपाल सिंह, श्री (मुरादाबाद)
सरोज वर्मा, श्रीमती (मेरठ)
सुखदा मिश्रा, श्रीमती (इटावा)
सुन्दर लाल, श्री (उन्नाव)
सुरेन्द्र सिंह, श्री (अलीगढ़)
सैयद अली अशरफी, श्री (पीलीभीत)
हफीज भारती, श्री (आजमगढ़)
हरिशंकर तिवारी, श्री (गोरखपुर)
हरिश चन्द्र (हरीश जी), श्री (बस्ती)
हाफिज मोहम्मद उमर, श्री (कानपुर)
हितेश कुमारी, श्रीमती (बुलन्दशहर)

विधान सभा सचिवालय उ०प्र०

शपथ-ग्रहण न करने वाले सदस्यों के सम्बन्ध में निर्देश

श्री कार्यकारी अध्यक्ष—

सदन के जिन माननीय सदस्यों ने अभी तक शपथ नहीं ग्रहण की है, उनके नाम यह हैं :

(1) कु0 अलमेलु अम्माल,

(2) श्रीमती कमला दरियावादी,

(3) श्री नरेन्द्र सिंह (कानपुर),

(4) श्री भगवान दीन कुशवाहा,

(5) श्री मोहम्मद असलम खां,

(6) श्री सैयद अली अशरफी ।

अगर ये सदन में मौजूद हों, तो कृपया वह बाहर चले जायं । अगर वह न हों, तो कोई बात नहीं ।

अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिए श्री राज्यपाल द्वारा श्री जयराम वर्मा की नियुक्ति की सूचना

सचिव, विधान सभा—

माननीय अध्यक्ष की अनुज्ञा से मैं श्री अध्यक्ष पद के कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए "भारत का संविधान" के अनुच्छेद 180 (1) के अन्तर्गत श्री राज्यपाल द्वारा श्री जयराम वर्मा (फैजाबाद) की नियुक्ति की सूचना देता हूं ।

विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन

श्री कार्यकारी अध्यक्ष—

माननीय मुख्य मंत्री जी, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय मंत्रिगण तथा अन्य माननीय सदस्यगण, आज का दिन अध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिए नियत किया गया है । नियमानुसार नाम-निर्देशन-पत्र 14 मार्च, 1985 के मध्याह्न के पूर्व तक आ जाने चाहिए थे । उक्त अवधि के अन्दर जो नामांकन पत्र प्राप्त हुए हैं उनका विवरण इस प्रकार है :

(1) श्री नियाज हसन, प्रस्तावक श्री नारायण दत्त, समर्थक श्री राम रतन सिंह ।

(2) श्री नियाज हसन, प्रस्तावक श्री लोकपति त्रिपाठी, समर्थक श्री वासुदेव सिंह ।

(3) श्री नियाज हसन, प्रस्तावक श्री मैनेजर सिंह, समर्थक श्री राम नरेश यादव ।

(4) श्री नियाज हसन, प्रस्तावक श्री राजेन्द्र गुप्त, समर्थक श्री मुलायम सिंह यादव ।

(5) श्री राम गोविन्द चौधरी, प्रस्तावक श्री जनार्दन प्रसाद ओझा, समर्थक श्री हर्ष वर्द्धन ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 8 के उपनियम (3) में यह उपबन्धित है कि निर्वाचन के पूर्व किसी भी समय कोई अभ्यर्थी, जो नाम-निर्देशित हुए हों, पीठासीन अधिकारी को इस विषय में मौखिक या लिखित रूप से सूचना देकर अपना नाम-निर्वाचन से वापस ले सकते हैं । तदनुसार उपर्युक्त अभ्यर्थियों में से श्री राम गोविन्द चौधरी ने लिखित सूचना देकर अपना नाम वापस ले लिया है ।

(तालियां बजाई गयीं)

और शेष 4 नाम निर्देशन-पत्रों में एक ही नाम का प्रस्ताव है, अतः इसके लिये औपचारिक प्रस्ताव करना आवश्यक नहीं है और मैं माननीय श्री नियाज हसन को अध्यक्ष पद के लिये सर्वसम्मति से निर्वाचित किये जाने की घोषणा करता हूं ।

नव निर्वाचित अध्यक्ष, श्री नियाज हसन को बधाई

श्री कार्यकारी अध्यक्ष--

इससे पूर्व कि मैं माननीय नेता सदन एवं माननीय नेता विरोधी दल से निवेदन करूं कि वे माननीय श्री नियाज हसन को अध्यक्ष पीठ पर लाकर आसीन करावें। मैं माननीय श्री नियाज हसन को सर्वसम्मति से निर्वाचित किये जाने पर बधाई देता हूं। श्री नियाज हसन इस माननीय सदन के काफी अनुभवी सदस्य हैं। इसके पूर्व 4 बार इस माननीय सदन के सदस्य रह चुके हैं। पांचवीं बार वह चुनकर आये हैं। वह ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने एशिया के कई देशों का दौरा किया है। उनकी खेती के काम में और बागवानी के काम में काफी दिलचस्पी है। इसलिये अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए किसानों के मसलों में काफी दिलचस्पी ले सकेंगे और माननीय सदन के सदस्यों को काफी अवसर मिल सकेगा। मैं समझता हूं कि वह इस पद के लिये काफी उपयुक्त व्यक्ति हैं और वह इस सदन की ठीक से सेवा कर सकेंगे। आशा है माननीय श्री नियाज हसन अपने व्यवहार एवं कार्यकलापों से अध्यक्ष पद की गरिमा को बनाये ही नहीं रखेंगे अपितु उसमें श्री वृद्धि करेंगे। मैं माननीय श्री नारायण दत्त, नेता सदन और माननीय श्री मुलायम सिंह यादव, नेता विरोधी दल से निवेदन करूंगा कि वे माननीय श्री नियाज हसन को अध्यक्ष पीठ पर लाकर आसीन करायें।

(नेता सदन और नेता विरोधी दल ने श्री नियाज हसन, अध्यक्ष विधान सभा को अध्यक्ष पीठ पर आसीन कराया)

(इस समय 3 बजकर 9 मिनट पर अध्यक्ष श्री नियाज हसन पीठासीन हुए।)

*मुख्य मंत्री (श्री नारायण दत्त)--

माननीय अध्यक्ष जी, ये क्षण इस नव गठित सदन के इतिहास में एक अविस्मरणीय क्षण के रूप में याद रखे जायेंगे। क्योंकि संसदीय इतिहास का प्रारम्भ, प्रजातन्त्र के मतैक्य एवं संसदीय मतैक्य के बिन्दु से प्रारम्भ हो रहा है, जो हम सब के लिए संसदीय परम्पराओं को मान्यता देता रहा है और जो हम सबके लिए प्रेरणादायक है। श्रीमन्, जिस सद्भाव की भावना से लोकतन्त्र के प्रति, संविधान के प्रति, आस्था व्यक्त करते हुए आपका सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ है, वह स्वयं अपने में, भविष्य के लिए मार्गदर्शन का एक बिन्दु है। मैं अत्यन्त विनम्रतापूर्वक, लेकिन हार्दिक उल्लास और आह्लाद के साथ अपनी तथा प्रत्येक माननीय सदस्य की भावनाओं को व्यक्त करते हुए आपका अभिवादन करता हूं, स्वागत करता हूं कि आप निर्विरोध इस सदन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्रीमन्, इस पद की गरिमा के संबंध में आप जैसे वरिष्ठ माननीय सदस्य को जो पांचवीं बार इस सभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए, संसदीय इतिहास के बारे में कुछ कहना उचित नहीं है। श्रीमन्, इस पद की बड़ी गरिमा रही है। अब तक जिन गौरव-मयी विभूतियों ने इस आसन को विभूषित किया है, उन्होंने अपने संसदीय ज्ञान से, अपने अनुभव से अपने विधि कौशल से, अपनी संसदीय परम्पराओं के ज्ञान से, हमें अवगत कराया है कि संसदीय प्रक्रिया के माध्यम से किस प्रकार सदन का परिचालन होता है और किस प्रकार सदन के परिचालन में, प्रत्येक संसदीय दायित्व के निर्वहन में क्या करना चाहिए, इसका मार्गदर्शन इस पद से होता रहा है।

श्रीमन्, मुझे विश्वास है कि आपके अध्यक्षकाल में, गौरव मंडित मर्यादा

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

और परम्परा सुनिश्चित करने में एक नया पृष्ठ जुड़ जायगा। हम एक कठिन अवसर से गुजर रहे हैं जबकि संसार में लोकतान्त्रिक परम्पराओं और आस्था पर हम यदा-कदा आघात होता देख रहे हैं, इसलिए हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है कि हम लोग लोकतन्त्र में निष्ठा रखते हुए, उसको परिपुष्ट एवं सशक्त रखते हुए, अध्यक्ष पद की गरिमा व महिमा को ध्यान में रखते हुए आपके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन को पूरा करें। उसके अनुसार हम चलें। हमें विश्वास है कि हम सब इस परम्परा का अनुसरण और आपके निदेशों का अनुपालन करेंगे।

यह अधिक कहने का अवसर नहीं है मैं आपको फिर हार्दिक बधाई देता हूं। इस सदन की ओर से, अपने दल की ओर से और संभवतः प्रत्येक माननीय सदस्य की ओर से। मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार नव बसन्त की बेला में, जलवायु में नव वासन्तिक आह्लाद प्रस्फुटित हो रहा है उसी प्रकार आप इस सदन में संसदीय जनतन्त्र और नियमावली के अनुसार संसदीय पद्धति एवं संसदीय परम्परा के संकल्प को इस संसदीय बयार से नव प्राणित करते रहेंगे। ऐसी आशा और विश्वास के साथ मैं आपका स्वागत करता हूं और विश्वास दिलाता हूं एक दल के नेता के रूप में कि हमारा दल हर प्रकार से आपके निदेशों का, संसदीय मान्यताओं का अनुपालन करने में कृत संकल्प रहेगा।

(मेजें थपथपाई गयीं)

श्री मुलायम सिंह यादव--

अध्यक्ष महोदय, आज आप इस सदन के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये। मुझे आशा है कि आपका जो पुराना अनुभव है, आप कई महत्वपूर्ण पदों पर भी रह चुके हैं और इस सदन में भी पांचवीं बार आप चुन कर आए हैं, इन सारे अनुभवों का लाभ इस सदन को मिलेगा। साथ ही एक ऐसा विश्वास हम करते हैं कि लोकतंत्र की मान्यताओं और मर्यादाओं का सदन के बाहर धीरे-धीरे ह्रास होता जा रहा है। यह कटु सत्य है कि हमारे इस माननीय सदन में जो सदस्य बैठे हैं, उनके साथ बाहर जो व्यवहार होता है, वह व्यवहार दलीय आधार पर होता है, लेकिन मैं और मेरे सभी साथी इस अवसर पर उम्मीद करते हैं कि सदन में आपके जो कार्य कलाप होंगे, जो निर्णय होंगे जो आपकी निष्पक्षता होगी, उससे सदन में तो न्याय मिलेगा ही सभी माननीय सदस्यों को, लेकिन इसका प्रभाव बाहर भी पड़े, यह मैं और मेरी सभी साथी आपसे उम्मीद करते हैं। इस अवसर पर मैं और ज्यादा नहीं बोलना चाहता। मैं आपका अपने सभी साथियों की ओर से और दल की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

कुंवर रेवती रमण सिंह--

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको आज मुबारकबाद देना चाहता हूं कि आप सर्वसम्मति से यहां पर अध्यक्ष पद के लिये निर्वाचित हुए हैं और आपके बारे में मैं खासतौर से मुख्य मंत्री जी को भी बधाई दूंगा कि उन्होंने आप ऐसे आदमी को पूरी कांग्रेस पार्टी में चुना और आपको अध्यक्ष पद के लिये निर्वाचित किया अपने दल से, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि आज निगाह उठाकर देखा जाय तो आज वरिष्ठता में और कार्यकुशलता में कोई दूसरा व्यक्ति कांग्रेस पार्टी में नजर नहीं आता।

आप 1962 से आज तक पांचवीं बार चुन कर आये हैं और मेरा आपका सम्बन्ध, मैं याद दिलाना चाहता हूं कि 1974 में जब मैं पहली बार चुन कर आया था प्रातःस्मरणीय गुप्ता जी के चरणों में, उस समय आप संगठन कांग्रेस के अध्यक्ष थे और मैं एमएल0ए0 चुनकर आया था, मेरा आपका सानिध्य तब से रहा है। मैं जानता हूं कि आपके कुछ आदर्श हैं कुछ मूल्य हैं और

कुछ मान्यताएं हैं। आप इन मूल्यों और मान्यताओं पर चलेंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। आप इस विधान सभा के दसवें अध्यक्ष हैं और मैं चाहूंगा कि राजर्षि पुरुषोत्तम दास टन्डन जी के आदर्शों पर चलकर आप इस सदन को, जो भारतवर्ष का सबसे बड़ा सदन है, इसकी गरिमा को आप कायम रखेंगे और एक बार फिर से जो तमाम मूल्यों में और मान्यताओं में आज ह्रास आ रहा है और प्रजातंत्र पर जो आज खतरा दिखाई पड़ रहा है, उसमें आप बहुत कुछ सहायक होंगे और फिर से उन मान्यताओं को पुर्नस्थापित करने के लिये आपका बहुत बड़ा योगदान होगा।

मान्यवर, हम सभी लोग आपको जहां मुबारकबाद देते हैं वहीं यह भी उम्मीद करते हैं कि आप सरकार पर अंकुश लगाएंगे और यह दिखायेंगे कि जिन जनतांत्रिक भावनाओं और परम्पराओं की कहीं अवहेलना न होने पाये। हमारी पार्टी और हम लोग आपको पूर्ण सहयोग देने का वचन देते हैं और यह उम्मीद करते हैं कि यह सदन आपके प्रभाव से एक बार फिर पुरानी मान्यताओं को प्राप्त करेगा। आपकी निर्भीकता एवं आपके कुशल संचालन से एक बार फिर इस प्रदेश का तथा इस सदन का नाम हमारे देश में होगा।

मैं आपको मुबारकबाद देता हूं और यह उम्मीद करता हूं कि जहां भी आप रहे, आपने जिस दक्षता से और निर्भीकता से काम किया है उसी प्रकार से आप इस सदन को चलायेंगे। मेरा और मेरी पार्टी के साथियों की मुबारकबाद आप स्वीकार करें।

श्री राजेन्द्र गुप्त—

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका इस सम्मानित पद पर निर्विरोध व सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ है। इसके लिए मैं आपको अपनी ओर से और अपने दल की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं और सम्मान प्रकट करता हूं।

मान्यवर, जैसा कि अभी नेता सदन और अन्य नेताओं ने भाव व्यक्त किए, आज यह बात बिल्कुल सही है कि अनेक समस्यायें विधान मंडल के सामने हैं। विधान मन्डल ही हमारी संसदीय भावनाओं को व्यक्त करने का एक साधन और सम्बल है और इसके सामने समस्याओं का होना अत्यन्त आवश्यक है। कई बार जनता की समस्याओं को लेकर इस आदरणीय सदन में हमारी व्यग्रता इस सीमा तक पहुंच जाती है, जिससे यहां का वातावरण ऐसा हो जाता है, जैसा नहीं होना चाहिए। इस मौके पर आपकी भूमिका अनुकरणीय होगी।

मैं समझता हूं कि आप अपने प्रशासनिक ज्ञान व संसदीय ज्ञान से तथा निष्पक्षता से इस जनतांत्रिक कार्यकलापों तथा इस सदन की जो गरिमामयी परम्परायें रही हैं, उसे कायम रखेंगे तथा इसका सुचारु रूप से संचालन करते रहेंगे। जैसा कि पूर्व में इसी अध्यक्ष पीठ से राजर्षि पुरुषोत्तम दास टन्डन जी और आत्मा राम गोविन्द खेर साहब ने इस सदन की परम्परायें कायम की और अपनी रूलिंग्स दी हैं, उसी प्रकार आप भी सही रूप में इस सदन का संचालन करते रहेंगे। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं आपको बधाई देता हूं।

एक भावना की और अभिव्यक्ति करना चाहता हूं कि जिस ताकत के साथ आपको यह स्थान मिला है, हमारी नियमावली के नियम 313 के अन्तर्गत आपको यह विशिष्ट अधिकार है, इन अधिकारों का पालन व कार्यान्वयन से ही इस सदन का सम्मान बढ़ता है। हमारी नियमावली में 90 दिन सदन बैठना चाहिए और एक वर्ष में 3 सत्र होने चाहिए। लेकिन मुझे भी इस सदन में काफी वर्षों से रहने का मौका मिला है। मैंने देखा कि इनका पालन आज तक नहीं हो सका है। इसी कारण कभी-कभी ऐसी स्थिति यहां पर पैदा हो जाती है, जिसे नहीं होना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि आप अपने अधिकारों का प्रयोग करेंगे और नियमावली के अनुसार काम होगा। सदन 90 दिन बैठेगा। जिससे जनता की समस्याओं का सही रूप में माननीय सदस्यों को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त हो पायेगा।

आपके प्रति पुनः श्रद्धा व्यक्त करते हुए यह वचन देना चाहता हूं कि मेरी पार्टी आपको इस आदरणीय सदन के कार्य संचालन में पूर्ण सहयोग देगी।

श्री राम चन्द्र बख्श सिंह---

मान्यवर, अध्यक्ष का पद ग्रहण करने पर मेरे दल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की बधाई स्वीकार करें। हम आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि इस सदन के कार्य संचालन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सभी सदस्य आपको पूर्ण सहयोग देंगे। अपने संसदीय ज्ञान व प्रशासनिक ज्ञान से आप इस सदन की गरिमा को आगे बढ़ाने में तथा माननीय सदस्यों के हितों की रक्षा करने में पूरी तरह से सफल सिद्ध होंगे, ऐसी मेरी आशा है।

मान्यवर, आज इस देश के अन्तर्गत लोकतांत्रिक मूल्यों व लोकतन्त्र को जो खतरा पैदा हो गया है और जिस तरह से विरोधी दलों को एक तरफ से सफाया करने की तैयारी की जा रही है। और यहां तक कि शारीरिक रूप से माननीय सदस्यों को जो बिल्कुल मैदान से हटा देने की बात की जा रही है, मुझे विश्वास है कि आपके संरक्षण में उनके हितों की रक्षा हो सकेगी। और विरोधी पार्टी की आवाज मुखर हो सकेगी। एक बार पुनः पूरे सहयोग का आश्वासन देते हुए अपनी ओर से एवं अपने दल की ओर से आपको इस पद पर आसीन होने पर हार्दिक बधाई देता हूं।

श्री कौशिक रमाशंकर---

मान्यवर, मैं अपनी तरफ से तथा अपने दल (कांग्रेस जे0) की तरफ से आपको अध्यक्ष पद पर आसीन होने पर बधाई देता हूं। मान्यवर, आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरा दल, आपके कार्य संचालन में, आपको पूरा सहयोग देगा। लेकिन, हमारी अपेक्षा होगी कि आप हमारे हितों का रक्षा करेंगे। मान्यवर, विरोधी पक्षों के हितों की सुरक्षा का जहां तक सवाल है वह अध्यक्ष महोदय के ही हाथ में होती है। अध्यक्ष महोदय को विशेष रूप से विरोध पक्ष का ध्यान, लोकतांत्रिक परम्पराओं को चलाने के लिये रखना पड़ेगा।

मान्यवर, बड़ी-बड़ी विभूतियां इस आसन पर सुशोभित हो चुकी हैं। पुरुषोत्तम दास टंडन जी इस आसन पर रहे हैं। उन्होंने एक बार सदन में कहा भी था कि यदि एक व्यक्ति का विश्वास भी मेरे प्रति नहीं है, तो वे अध्यक्ष पद पर नहीं रहेंगे। मान्यवर, मुझे तथा मेरे दल को पूरा विश्वास है कि आप हमारे हितों की रक्षा करेंगे एवं जो परम्परायें इन विभूतियों ने स्थापित की हैं, उनको आप कायम रखेंगे और लोकतांत्रिक परम्पराओं को आगे बढ़ाने के लिये एवं इस सदन को जन आकांक्षाओं का दर्पण बनाने के लिये आप अपनी सुव्यवस्थाओं से प्रकाशमान रखेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ में एक बार पुनः आपको इस पद पर आसीन होने पर बधाई देता हूं।

श्री देव कुमार यादव--

मान्यवर, आपके अध्यक्ष निर्वाचित होने से इस प्रदेश की विधान सभा की जो गरिमा बढ़ी है, उसको शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। मान्यवर, आपके साथ इस सदन में काम करने का जो अवसर मिला और इस प्रदेश के मंत्री के रूप में और सदस्य के रूप में जो छवि आपकी उभरी है, उस संदर्भ में इस पद पर सुशोभित होने से हमारी विधान सभा का भी गौरव बढ़ा है। मान्यवर, हमको आशा है कि अपने कार्यकाल में आपके निर्देश शासक

दल और विरोधी दल के साथ, एक से रहेंगे इस सदन में और इसके साथ ही साथ हम लोगों को ऐसा कभी एहसास नहीं होगा कि किसी प्रकार का भेदभाव बरता जा रहा है ।

इन्हीं शब्दों के साथ मान्यवर, हम अपने दल की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं ।

श्री अध्यक्ष--

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य माननीय नेतागण, सदस्यगण, आप सबने मेरे बारे में, जो विचार व्यक्त किये मैं अपने को इस काबिल नहीं पाता । यह वह कुर्सी है, यह वह पद है, जिसे माननीय टंडन जी ने पहली दफा इसको संभाला, सदन की गरिमा, मर्यादा हम आप सब पर मुहसिर है । यहां चाहे यह पक्ष हो, चाहे वह पक्ष हो, एक तराजू रहेगा और उसी तराजू पर हर प्रश्न तौला जायगा । मैं सिर्फ आप सब से यह अनुरोध करना चाहूंगा कि जैसा मैंने कहा कि मैं अपने को इस काबिल नहीं पाता, मैं आप सबका सहयोग चाहता हूं इस सदन की मर्यादा और गरिमा के लिये । जनतन्त्र तभी कायम रह सकता है जब सदन सुचारू रूप से चले । जहां तक मेरा प्रश्न है चाहे इस तरफ के माननीय सदस्य हों चाहे उस तरफ के हों, अगर कोई शिकायत पैदा हो, हर प्रश्न का जवाब तो सम्भव नहीं है और हर व्यक्ति को हो सकता है कि बोलने का मौका न मिल सके तो मेरे कक्ष में आयें । जिस विभाग से उस समस्या का ताल्लुक होगा उस विभाग के मन्त्री जी को भी तकलीफ दी जायगी और आपकी कठिनाइयों का समाधान निकाला जायगा ।

मैं आशा करता हूं कि जैसा मैंने आपसे कहा इस सदन की गरिमा और मर्यादा को आप कायम रखेंगे । जैसा अभी एक माननीय सदस्य ने कहा, कि अगर किसी व्यक्ति का विश्वास मुझे नहीं है, तो मुझे एक मिनट भी इस पद पर नहीं रहना है ।

(मेजों की थपथपाहट)

मैं यह आशा करूंगा कि कोई हंगामे की जरूरत नहीं है कोई ऐसी बात हो तो हमारे कमरे में आ सकते हैं, बात कर सकते हैं । नेता सदन और मन्त्रिमंडल के लोग सुलझे हुए व्यक्ति हैं । मैं आशा करता हूं कि आप सब की जो भावनायें हैं, उनका मैं आदर करने की कोशिश करूंगा । इन्हीं शब्दों के साथ आपका आभार प्रकट करता हूं ।

अब हम उठते हैं, कल 12-30 बजे पुनः बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन 3 बजकर 31 मिनट पर अगले दिन के 12 बज कर 30 मिनट तक के लिये स्थगित हो गया ।)

लखनऊ : भोल चन्द्र शुक्ल,

15 मार्च, 1985 सचिव,

विधान सभा,

उत्तर प्रदेश

पी0 एस0 यू0 पी0--5 वि0 सभा--6-5-85(पी0 डी0) ।